THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

प्रार्थना से उच्च रक्तचाप की समाप्ति, एक पुस्तक का संदेश

High Blood Pressure Yields To Prayer, A Book's Message

Author – Madhu Bhutani

The Christian Science Journal Vol. 128, No. 10, October, 2010

दुबई में रहते हुए 1990 के दशक में – क्रिश्चियन साँयस तथा सत्य के आनन्द को खोजने से पहले मैंने सुना था कि उच्च रक्तचाप का कारण आनुवंशिकता होती है। मेरे माता – पिता दोनों ही इस रोग से पीड़ित थे, मैं बहुत हैरान नहीं थी जब मुझमें भी इसी रोग के लक्षण दिखे। मुझे अक्सर सिरदर्द होता था और रातों को नींद नहीं आती थी तथा हमारे पारिवारिक डॉक्टर से कई बार मिलने के बाद उन्होंने दवाएँ लिख कर दीं जो कि आखिरकार मेरे लिए उचित लग रही थीं। मुझे सचेत किया गया था कि मुझे यह गोलियां रोज़ लेनी होंगी अन्यथा नतीजे गंभीर होंगे।

मैं साँयस एण्ड हैल्थ में से कुछ न कुछ निकालती रहती थी जब से उसकी एक प्रति बॉम्बे में एक अंकल और आंटी द्वारा मुझे उपहार में दी गई थी, परन्तु वास्तव में मैंने कभी नहीं समझा या स्वीकार किया कि मैं पूर्ण तथा सम्पूर्ण थी – क्योंकि मैं परमेश्वर का विचार थी। यह केवल उनके साथ एक भेंट के दौरान हुआ कि मैंने अपनी पहचान के सत्य की समझ की आज़ादी को देखा। जो कि एक आनन्दमयी पारिवारिक शाम होनी चाहिए थी, उसमें मैं अचानक तीव्र पेट दर्द के लक्षणों के साथ पाई गई। जैसे ही मैं पागलों की तरह अपने डॉक्टर को संपर्क करने की कोशिश कर रही थी, मेरे अंकल ने शांतिपूर्वक मुझ से आराम करने को कहा – और उन्होंने प्रार्थना की। उपचार लगभग तुरंत हुआ। और मुझे "बोध" भी हो गया। यदि एक छोटी से प्रार्थना पेट दर्द से छुटकारा दिला सकती थी, यकीनन क्या यह समय नहीं था दवाओं की गुलामी का अंत करने का, जिन्हें मैं वर्षों से उच्च रक्तचाप को संचालित करने के लिए ले रही थी?

मैंने अपने अंकल को फोन किया जो कि अब तक जरनल – लिस्टिड क्रिश्चियन साँयस उपचारक बन चुके थे, और उन्हें बताया कि मैं उच्च रक्तचाप के लिए प्रार्थना का उपचार प्राप्त करना चाहती थी। मेरे प्रतिदिन की गोलियों की मात्रा को तुरंत त्यागने के भय को समझते हुए – उन्होंने मुझ से प्रार्थना करने को कहा – तथा कहा कि वह भी प्रार्थना करेंगे – यह समझाते हुए कि परमेश्वर, एक मन मुझे मेरी पूर्ण इच्छा और ग्रहणशीलता के बारे में बता देगा क्योंकि "तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हे आज़ाद कर देगा" (युहन्ना 8:32)।

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [Hindi], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2010 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

उन्होंने मुझे साँयस एण्ड हैल्थ में "मानव क्या है?" प्रश्न का उत्तर पढ़ने को कहा जो कि एक भाग में कहता है "मानव विचार है, प्रेम का रूप; वह दैहिक नहीं है"(पृष्ठ 475)। मानव की इस नई परिभाषा को समझने की कोशिश करते हुए, मैंने मेरी बेकर एडी की पूर्ण व्याख्या को पढ़ा तथा बार-बार पढ़ा धीरे-धीरे मैंने देखा कि मैं उसके हाथों में थी, तथा उसके द्वारा-दिव्य मन द्वारा संचालित की जाती थी। मुझे लगभग तीन से चार महीने लगे दवाएं लेनी बंद करने में तथा अपने विश्वास की पूरी तरह परमेश्वर पर स्थिर करने में।

कई ऐसे पल थे जब मैंने लक्षणों को वापिस आते महसूस किया और भय लौट आता, परन्तु तब मैं साँयस एण्ड हैल्थ खोलती और जो कुछ भी मेरे सामने आता उसे पढ़ने लग जाती। कभी-कभी घबराहट और सिर दर्द मुझे अपने अस्तित्व के सत्य से परे ले जाने में प्रलोभित करने की कोशिश करते थे, और तब जिस पथ को मैंने चुना था उसे प्रार्थना से सुदृढ़ करने के लिए अपने अंकल को फोन करती थी। उन्होंने मुझे परमेश्वर की बेटी होने के नाते अपनी सम्पूर्णता का साहसपूर्वक दवा करने को कहा-हर एक चीज़ अपने सही स्थान पर होते हुए। जैसे ही हमने एक साथ प्रार्थना करनी जारी रखी धीरे-धीरे लक्षण घटते गए।

उन्होंने मुझसे साँयस एण्ड हैल्थ (शुरू से अंत तक) पढ़ने को कहा और लगभग छह महीनों में उस समय से जब मैंने दवाओं और स्वंय की एक शारीरिक समझ से मुक्त होना शुरू किया था, मैं सुचारू रूप से स्वास्थय प्राप्त करने के रास्ते पर आ गई थी। अपनी सोच के दरवाज़े पर मैं पहरेदार की तरह खड़ी थी और परमेश्वर की सम्पूर्ण देखभाल में अपने विश्वास से मुझे हिला देने वाली किसी भी चीज़ को प्रवेश नही करने देती थी। मैंने पुस्तक को धीरे-धीरे पृष्ठ से पृष्ठ पढ़ने के महत्व को देखा, क्योंकि जब त्रुटि आवाज़ उठाने की कोशिश करती, परमेश्वर की अच्छाई का सत्य और ऊँचा बोलता। मेरी नई समझ ने हर भय का पूरी तरह से स्थान ले लिया और लक्षण पूरी तरह से लुप्त हो गए। मैं बारह सालों की गुलामी से आज़ाद हो गई थी तथा पिछले पाँच सालों से अपनी आज़ादी का जश्न मना रही हूँ।

मैं अपने अंकल का धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने इस आज़ादी के लिए मेरी इच्छा को सहारा देने में बड़े प्रेम से मेरी मदद की, तथा मैं मेरी बेकर ऐडी के प्रती बहुत कृतज्ञ हूँ जो कि मन की दवा-सत्य को हमारी पहुँच मे लाई।

Translation © 2010 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 50 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.